Roll No. .....
Signature of Invigilator .....

Paper Code
BD-205

पतंजलि विश्वविद्यालय

University of Patanjali

Examination June – 2022

B.A. Darshan, Semester : Second
Darshan ; Paper : Fifth
संस्कृत–साहित्य

Time: 3 Hours **Max. Marks: 70**

नोट : यह प्रश्नपत्र सत्तर (70) अंकों का है जो दो (02) खंडों क, तथा ख में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों को हल करना है।

खण्ड–क
(दीर्घ–उत्तरीय प्रश्न)

नोट : खण्ड 'क' में पांच (05) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न दिए हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए पंद्रह अंक निर्धारित हैं। किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। **(3×15=45)**

1. कठोपनिषद् में वर्णित 'श्रेय' तथा 'प्रेय' के भेद को प्रमाणपूर्वक विस्तार से बतायें।
2. चतुर्थ अध्याय के किन श्लोकों में अहंकार से रहित कर्म करने की प्रेरणा हमें प्राप्त होती है, विस्तार से बताएं।
3. यमाचार्य द्वारा जीव और ब्रह्म के रूप का वर्णन किस प्रकार से बताया गया है, प्रमाणपूर्वक प्रतिपादित करें।
4. गीता के पञ्चम अध्याय में वर्णित 'संन्यास विधि' को प्रमाण सहित बताएं।
5. गीता के चतुर्थ अध्याय में वर्णित 'यज्ञ' शब्द का तात्पर्य बताते हुए 'कर्मक्षय' किस प्रकार के यज्ञ से होगा, प्रमाणसहित वर्णन करें।

खण्ड–ख
(लघु–उत्तरीय प्रश्न)

नोट : खण्ड 'ख' में सात (07) लघु उत्तरीय प्रश्न दिए गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए पांच अंक निर्धारित हैं। किन्हीं **पांच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। **(5×5=25)**

6. "आत्मानं रथिनं विद्धि ..... " श्लोक पूर्णकर भावार्थ को विस्तार से समझाइए।
7. कौन–से मनुष्य को 'निर्वाण पद' की प्राप्ति होती है? प्रमाणसहित वर्णन करें।
8. कर्म, अकर्म, विकर्म को प्रमाणसहित विस्तार से समझाइये।
9. "असंगभाव" से कर्म करें? प्रमाण देकर बताएं।
10. "अन्तर्मुख होते ही ब्रह्म के दर्शन होते हैं?" प्रमाण देकर विस्तार से समझाइये।
11. "कर्म संन्यास योग" इस अध्याय का सार रूप में वर्णन अपने शब्दों में करें।
12. "कठोपनिषद्" में वर्णित ज्ञान को स्वशब्दों में प्रमाणपूर्वक बताएं।

----------x----------